**E-ISSN:** 2706-8927
**P-ISSN:** 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2021; 3(3): 291-293
Received: 03-04-2021
Accepted: 10-06-2021

**अभिनन्दन पाण्डेय**
शोध छात्र दर्शन एवं संस्कृति विभाग, महात्मा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र, भारत

**Corresponding Author:**
**अभिनन्दन पाण्डेय**
शोध छात्र दर्शन एवं संस्कृति विभाग, महात्मा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र, भारत

# भारतीय दर्शन में मोक्ष की अवधारणा

## अभिनन्दन पाण्डेय

**सारांश**
मोक्ष का अर्थ है कष्टों की समाप्ति। भारतीय दर्शन में सभी 9 दर्शन पूर्णतः मोक्ष को मानते है, मोक्ष के मानने की दृष्टिकोण, स्वरूप व प्राप्त करने के प्रकार में अंतर हो सकता है लेकिन सभी दर्शन मोक्ष को मानते है, कोई निर्वाण, कोई मोक्ष, कोई कैवल्य कोई अर्हत् कोई मुक्ति, कोई बोधिसत्व कोई स्वर्ग इत्यादि नामों से मोक्ष की उपमा देते हैं। मोक्ष पाने के रास्तों में अंतर है लेकिन अंततः मोक्ष मिलने के बाद एक हो जाते है, यानी सभी दर्शनों में मोक्ष पाने के साधन अलग–अलग बताये गये हैं लेकिन सभी का साध्य एक ही है। जैसे मुझे इलाहाबाद से दिल्ली जाना है तो कई तरीकों से वहां पहुंचा जा सकता है जैसे–मोटर साईकिल से, कार से, हवाई जहाज से सभी साधनों से आप पहुंच सकते है लेकिन हां पहुंचने के समय में व रास्तों में अंतर है लेकिन लक्ष्य सुनिश्चित है, सभी प्रकार सभी भारतीय दर्शन में मोक्ष की अवधारणा भिन्न–2 रही है लेकिन लक्ष्य सबका मोक्ष ही है। भारतीय दर्शन में आस्तिक व नास्तिक सभी इसे स्वीकार करते है।

**मुख्यशब्दः** मोक्ष, निर्वाण, अर्हत, अपवर्ग, कैवल्य, मुक्ति।

**प्रस्तावना**
भारतीय दर्शन की तरह उपनिषद में भी बंधन व मोक्ष को स्वीकार किया गया है। मोक्ष ही जीवन का परम लक्ष्य माना या स्वीकार किया गया है।
आखिर हम मोक्ष क्यों चाहते है यह प्रश्न भी बहुत वाजिब है। मोक्ष हम इसलिए चाहते है क्योंकि हम बंधन में है, बंधन से मुक्ति ही मोक्ष है। बंधन को उपनिषद में ग्रन्थि भी कहा गया है–ग्रन्थि का अर्थ है–बंध जाना। मोक्ष अंधकार से प्रकाश में आना है। विद्या से ही मोक्ष संभव है। विद्या के विकास के लिए उपनिषद में नैतिक अनुशासन पर बल दिया गया है। इन सब में सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य अपरिग्रह प्रमुख है। मोक्ष की प्राप्ति होने पर जीव अपने वास्तविक स्वरूप की पहचान लेता है–

''ब्रह्म विद्ब्रह्मैव भवति'' वृहादारण्यक उपनिषद

अर्थात् जो ब्रह्म को जान लेता है वह स्वयं ब्रह्म हो जाता है। उपनिषद में ब्रह्म ही मुक्ति/मोक्ष है जिस प्रकार बूंद संमुद्र में समाकर अपना वजूद तो समाप्त कर लेती है लेकिन वह मुक्त हो जाती है। उसी प्रकार जीव भी बूंद की तरह ब्रह्म में विलीन होकर मुक्त हो जाता हैं। प्रारब्ध कर्मों के क्षय हेा जाने पर जीवन मुक्त विदेह मुक्त हो जाता है। जीवन मुक्त व विदेह मुक्त अवधारणा में विभिन्न दार्शनिकों ने भिन्न–भिन्न रूप में स्वीकार किया है। उपनिषद में क्रम–मुक्ति या क्रमशः मुक्ति का भी एक रूप प्राप्त है जिसके अनुसार मुक्ति एकाएक या अचानक से नहीं प्राप्त होती है अपितु क्रमशः या क्रमिक रूप से प्राप्त होती है। उपनिषद में मुक्ति की अप्राप्तस्य की प्राप्ति न मानकर इसे आत्मा का मूल स्वरूप कहा जाता है, इसलिए यह प्राप्तस्य प्राप्ति कहा गया हैं।

**उपनिषद में मोक्ष पाने की एक प्रक्रिया है जो तीन चरणों में पूर्ण होती हैं।**
1. श्रवण–गुरू के उपदेशों की श्रद्धापूर्वक सुनना चाहिए।
2. मनन–गुरू के उपदेशों की चिंतन एवं विचार करना चाहिए।
3. निदिध्यासन–यह जो ज्ञान प्राप्त हो गया है उसे अभ्यास के द्वारा निरन्तर बनाये रखना चाहिए।

**इस प्रक्रिया के पालन से बंधन ग्रस्त आत्मा मुक्त हो जाती है और मोक्ष की प्राप्ति होती हैं।**
चार्वाक दर्शन ने पूर्णतः भौतिक वादी है फिर भी मोक्ष की अवधारणा से अछूता न रहा, मोक्ष के लिए काम व मोक्ष को मूल मानता है चार्वाक कभी–कभी काम को ही मोक्ष मान लेता है। मोक्ष को चार्वाक प्रत्यक्ष रूप से कभी–कभी काम को ही मोक्ष मान लेता है। मोक्ष की चार्वाक प्रत्यक्ष रूप से कभी स्वीकार नहीं करता है। लेकिन फिर भी मोक्ष की अवधारणा उसके दर्शन में पहुंचा ही जाती है,

मोक्ष को चार्वाक अपवर्ग कहता है चूंकि मोक्ष के संदर्भ में चार्वाक दर्शन में आत्मा को नहीं स्वीकार करने से समस्या उत्पन्न होती है तब मोक्ष या अपवर्ग मिलेगा किसे यह प्रश्न उठता है तब चार्वाक कहते है–

''मरण मेवापवर्गः'' (Death is Liberation)

कोई भी बौद्धिक प्राणी कभी भी मृत्यु की कामना नहीं कर सकता है, अतः मोक्ष ही मुक्ति हैं यानी मृत्यु ही मुक्ति है, मृत्यु ही अपवर्ग है। चार्वाक काम की परम पुरुषार्थ मानता है और हम कह सकते है कि चार्वाक का मोक्ष आधुनिक और वर्तमान भौतिकवादी है जिस प्रकार आधुनिक दुनिया पूर्णतः भौतिक सत्यता को स्वीकार करती है, उसी प्रकार है।
गौतम बुद्ध ने इसी मोक्ष को निर्वाण कहा। निर्वाण का अर्थ है–बुझ जाना। गौतम बुद्ध के चार आर्य सत्यों में निर्वाण की प्राप्ति को चतुर्थ आर्य सत्य में बताया।
बौद्ध दर्शन के अनुसार–सब कुछ अनित्य है यानी क्षणिक है सब कुछ निःसार है तथा इसमें केवल निर्वाण ही ऐसा है जहां शन्ति है। यह त्रिसूत्र बौद्ध शिक्षा का आधार है। बुद्ध मूलतः अपने आष्टांगिक मार्ग के त्रिसूत्री शिक्षा प्रज्ञा, शील व समाधि है। बौध दर्शन में मोक्ष की प्राप्ति के लिए आष्टांगिक मार्ग हैं।
बौद्ध दर्शन में मोक्ष को निर्वाण कहा गया है, इसमें से मोक्ष के दो प्रकार है–सदेह मुक्ति व विदेह मुक्ति।

**इस प्रकार से दो प्रकार के मोक्ष की भी दो नामों से जाना जाता है।**

1. बोधिसत्व
2. अर्हत

बोधिसत्व को बड़ी नाव यानी खुद मुक्त या मोक्ष प्राप्त करके अन्य को मोक्ष प्रदान करने में सहायता की जाती है, तथा अर्हत को छोटी नाव यानी खुद को मुक्ति के बाद छोड दिया जाता है। इन्हीं को दो सम्प्रदाय महायान व हीनयान कहा जाता है।
जैन दर्शन तो मोक्ष के स्वरूप के लिए यह कहता है कि–''पुद्गल विनाश ही मोक्ष है''। जब जीव का पुदगल से संयोग होता है तो वह बंधन में पड़ जाता है और पुद्गल से वियोग यानी उससे दूर होना ही मोक्ष है। पुद्गल से वियोग तभी हो सकता है तब पुद्गल का प्रवाह पहले जिसे आस्राव कहते है वह बंद हो और जो पुद्गल जीव में पहले से प्रविष्ट है वह जीर्ण हो जाए। पहले को संवर और दूसरे की निर्जरा कहते है। जीव में पुदगल की प्रवाह जीव के अंतनिर्हित कषायों के कारण होता है। इन कषायों का कारण अज्ञान है अर्थात् अज्ञान दूर होना ही मुक्ति है। जैन दर्शन भी मोक्ष शास्त्र है।

''सम्यग दर्शन ज्ञान परित्राणि मोक्ष मार्ग''। जैन उमास्वामी–
ये त्रिरत्न ही मोक्ष प्रदान करते हैं।

जैन दर्शन में मोक्ष को कैवल्य कहा गया है कैवल्य ही ऐसी अवस्था है, जिसमें निश्चित रूप से तथा पूरी कैवल्य ही ऐसी अवस्था है जिसमें निश्चित रूप से तथा पूरी तरह दुःख नाश का सामर्थ्य है, मोक्ष, मुक्ति आदि इसके पर्याय है।
न्याय दर्शन में जीवात्माओं की अपने मूल का ज्ञान व मोक्ष पाने का मार्ग प्रदान करना ही न्याय दर्शन का उद्देश्य है। न्याय दर्शन में मोक्ष को अपवर्ग कहा गया है, न्याय दर्शन में तत्वज्ञान की प्राप्ति ही अपवर्ग है।
नैयायिको के अनुसार–मोक्ष दुःख के पूर्ण निरोध की अवस्था है। अपवर्ग शरीर और इंद्रियों के बंधनों से आत्मा का विमुक्त होना। जब तक आत्मा शरीर ग्रस्त रहता है तब तक पूर्ण मुक्ति सम्भव नहीं हैं। न्याय के अनुसार अपवर्ग की स्थिति में दुःख का सदा के लिए अंत हो जाता है। यह आत्मा की वह चरम अवस्था है जिसका वर्णन धर्म–ग्रंथों में अभयम्, अजरम्, अमृत्युपदम् आदि नामों से किया जाता है।
न्यायिक के अनुसार अपने संचित कर्मों का फल भोग लेने के बाद फिर वह जन्म मरण के चक्रव्यूह में नहीं आता और पुर्नजन्म से भी मुक्ति मिल जाती है यही मोक्ष या अपवर्ग हैं।
वैशेषिक के अनुसार मोक्ष की अवस्था में दुःखों के साथ–साथ सुखों का भी अभाव हो जाता है मोक्ष की स्थिति सुख दुःख दोनों से भूत है। इस दशा में आत्म प्रवेश करने पर आगन्तुक धर्मों का परित्याग कर देती है। जिस प्रकार सुसुप्तावस्था में जड़ पाषाणवत् संज्ञा शून्य हो जाता है। आत्मा की मन, वाणी या शरीर से किसी कर्म को करने की प्रवृत्ति नहीं होती है अतः वह पुनर्जन्म नहीं ग्रहण करता है। धीरे–धीरे उसके प्रारब्ध कर्म समाप्त हो जाते है और उसके समापन के बाद मोक्ष के द्वार खुल जाते है।
सांख्य दर्शन में भी मोक्ष की ही मूल माना गया है। सामान्य हमारा जीवन सुख–दुख से भरा रहता है। मनुष्य सामान्यतः सुख की चाहत रखता है और दुःख से दूर ही रहना चाहता है सांख्य दर्शन में भी प्रकृति का पुरुष से संयोग ही बंधन है और इनसे विखण्डन ही मुक्ति है। जब तक हमारे पास ये नश्वर शरीर है, ये दुर्बल इंद्रिय है तब तक सभी सुखों का दुःख मिश्रित होना अथवा अत्यधिक होना अवश्य संभव है। हमें सुखवाद को त्यागे और दुखों से दूर रहे तो हमें मुक्ति मिलती है। यही मुक्ति, अपवर्ग या पुरुषार्थ कहलाती है। सांख्य दर्शन में दो ही मूल सत्ताएँ है एक चेतन पुरुष और उसके विषयभूत जड़ पदार्थ। पुरुष शुद्ध चैतन्य स्वरूप है जो देश–काल और कारण के बंधनों से रहित है। आत्मा या पुरुष सांसारिक विषयों से परे शुद्ध चैतन्य या ज्ञान नित्य, अविनाशी और मुक्त है। एक रस ज्ञान स्वरूप होता हैं जो देश–काल और कारण के बंधनों से रहित हैं। आत्मा या पुरुष सांसारिक विषयों से परे शुद्ध चैतन्य या ज्ञान नित्य अविनाशी और मुक्त है। एक–एक रस ज्ञान स्वरूप होता है। आत्मा शारीरिक और मानसिक क्रियाओं का केवल साक्षी मात्र है यह दोनों से भिन्न हैं। यह दैशिक कालिक बंधनों और कारण कार्य श्रृंखला से मुक्त, नित्य व अमर हैं, क्योंकि यह उत्पन्न व विनाश से परे है। यही मुक्ति है।
योग दर्शन में जब चित्त में विकार आ जाते है तो वह बंधन में पड़ जाता है। फलस्वरूप वह सांसारिक विषयों से सुख दुःख का अनुभव करने लगता है, और उनमें राग, द्वेष का भाव रखने लगता है और बंधन को जटिल करता चला जाता है। इससे मुक्ति के लिए–

**''चित्तवृत्ति विरोध योग''**

अर्थात् चित्त की वृत्तियों की रोकना ही योग है, यही मुक्ति है। जब कार्यचित्त का धारा प्रवाह बंद हो जाता है और वह कारण चित्त के रूप में (शांत अवस्था में) आ जाता है तब आत्मा नित्य शुद्ध मुक्त हो जाती है। यही मुक्ति है, यही योग है। इस अवस्था में चंचल लहरी का उठना बंद हो जाता है।
मीमांसा दर्शन में मोक्ष का स्वरूप लगभग न्याय/वैशेषिक की तरह है। मीमांसा के अनुसार शरीर और इंद्रिय के द्वारा जब विषयों के संपर्क में आता है तभी उसे सुखःदुख आदि का अनुभव या ज्ञान होता है, मुक्त आत्मा शरीर इन्द्रियों व मन से पृथक हो जाता है इसलिए उसमें चैतन्य का धर्म नहीं रहता। आत्मा के मोक्ष के लिए केवल स्वरूप भाव के सिवा उसे शब्दों में वर्णित नहीं किया जा सकता उसमें सत्ता और चैतन्य की निहित शक्ति (वास्तविक चैतन्य नहीं) विधमान रहती है। बाद में कुछ मीमांसको ने मुक्ति को सच्चिदानन्द स्वरूप मानने लगे थे।

वेदान्त के आत्मा की चार अवस्थाएं मानी जाती है–जागृत, स्वप्न, सुसुप्ता व तुरीया इसके जब हम तुरीयावस्था में चले जाते है यही ब्रह्म की अवस्था है। वेदान्त में कोई द्वैत नहीं। तब कुछ ब्रह्म ही है, वही मोक्ष है। वेदान्त में मोक्ष की लेकर कई धारणाएं है जैसे–शंकर मोक्ष की प्राप्त की प्राप्ति मानते है जब कि रामानुज अप्राप्त की प्राप्ति मानते है। वेदांत के अनुसार मनुष्य को अनादि अविद्या के बद्धमूल संस्कारों पर विजय प्राप्त करना ही मोक्ष है।

**इसमें साधन चातुष्टय की बात की जाती है**

1. नित्यानित्य–वस्तु–विवेक (नित्य व अनित्य पदार्थों की पहचान)
2. इहामुत्रार्थ भोग–विराग (लौकिक और पारलौकिक सभी भोगें की कामना का त्याग)
3. शमदमादि साधन संपत् (शम, दम, श्रद्धा, समाधान, उपरति और तितिक्षा से युक्त)
4. मुमुक्षत्व–साधक को मोक्ष के लिए दृढ़ होना

फिर मन, इन्द्रिय, वासना पर विजय के बाद श्रवण, मनन, निहिध्यासन करना चाहिए।
बार–बार ब्रह्मविधा के अनुशीलन तथा तद्नुकूल आचरण से पूर्व संस्कार का क्षय तत्पश्चात् मुमुक्षु की गुरू (तत्वमसि) तू ब्रह्म है। वाक्य की दीक्षा देते है।
जब आत्मा साक्षात्कार हो जाता है तब ''(अहं ब्रह्मस्मि)'' अर्थात् मैं ही ब्रह्म हूं। जीव का बंधन समाप्त हो जाता है और वह मोक्ष का साक्षात् अनुभव होता है।
सभी भारतीय दर्शन का अंतिम लक्ष्य मोक्ष ही है। मोक्ष जीवन के कर्म बंधन से मुक्त की अवस्था है, न यह सुख है, न यह दुःख है न खुशी है, लेकिन यह ऐसा अवस्था जो शब्दों से परे अनुभूति का विषय है, यदि सम्पूर्ण मानव प्रजाति इसका अनुसरण करे तो इस सुख से परे की अवस्था में मानव रहेगा जो निर्वाण अर्हत कैवल्य, मोक्ष है। मोक्ष जीवन मरण के चक्र से तथा परिणाम स्वरूप सभी प्रकार के सांसारिक दुःखी से हमेशा के लिए मुक्ति है।

**मुक्ति दो प्रकार की है–**

1. जीवन मुक्ति–जीवावस्था में ही मुक्ति या ज्ञान।
2. विदेह मुक्ति–जीवन मुक्त की जो अवस्था प्राप्त होती है।

पारमर्थिक दृष्टि से मुक्ति न तो उत्पन्न होती है, न पहले से अप्राप्त है, यह प्राप्त ही की प्राप्ति है।

**संदर्भ**

1. दत्त एवं चटर्जी (1994) भारतीय दर्शन, पुस्तक भण्डार पटना।
2. शर्मा चन्द्रधर (1998) भारतीय दर्शन आलोचना एवं अनुशीलन मोती लाल बनारसी दास, दिल्ली।
3. दास गुप्ता एस0एन0 (1989) भारतीय दर्शन का इतिहास, भाग 4–5 राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, द्वितीय संस्करण।
4. राधाकृष्णन स्वामी–वेदान्त दर्शन
5. उपनिषद्–ब्रह्मसूत्र
6. राधाकृष्णन–भारतीय दर्शन, भाग 1–2
7. शर्मा उमाशंकर (1984)–महावाचार्यकृतसर्वदर्शन संग्रह, चौखम्भा विद्या भवन, वाराणसी, तृतीय संस्करण